



75  
आज़ादी का  
अमृत महोत्सव



# व्यवसायिक योजना

## हथकरघा

(शॉल, स्टॉल व मफलर बुनाई)

सरस्वती स्वयं सहायता समूह ( लोट )



जैवविविधता प्रबंधन कमेटी	शिलिराजगिरी
उप-समिति	लोट
ग्राम पंचायत	दोहरानाला
वन परिक्षेत्र	वन्यप्राणी परिक्षेत्र, कुल्लु
वनमंडल	वन्य प्राणी मंडल कुल्लु
वनवृत्त	GHNPCircle, शमशी

हिमाचल प्रदेश वन पारिस्थितिकी तंत्र प्रबंधन और आजीविका सुधार परियोजना  
(जाईका वित्तपोषित )

## विषय –सूची

क्र०सं०	विवरण	पृष्ठ संख्या
1	परिचय	3
2	कार्यकारिणी सारांश	4-5
3	स्वयं सहायता समूह/समान रूचीसमूह का विवरण व सूची	5-6
4	गांव की भौगोलिक स्थिति का विवरण	6- 7
5	आय सृजन गतिविधि से सम्बन्धित उत्पाद का विवरण	7
6	उत्पादन की प्रक्रियाएँ	7-9
7	उत्पादन नियोजन	9
8	कच्चे माल की आवश्यकता	9-10
8	विक्रय तथा विपणन	10-11
9	सदस्यों के मध्य प्रबन्धन का विवरण	11
10	शक्ति, दुर्बलता, अवसर तथा चुनौती का विश्लेषण (SWOT Analysis)	12
11	सम्भावित जोखिम व उनको कम करने के उपाय	12-13
12	व्यवसाय योजना की अर्थव्यवस्था का विवरण	13-14
13	अर्थव्यवस्था का सारांश	14
14	वित्तीय सारांश	15
15	मूल्यलाभ विश्लेषण	15
16	धन की आवश्यकता	16
17	सम विच्छेदन बिंदु	16
18	समूह के नियम	16-17
19	समूह के सदस्यों की फोटो & सहमती पत्र	17-18

## 1. परिचय

हथकरघा उद्योग प्राचीन काल से ही हाथ के कारीगरों को आजीविका प्रदान करता आया है। भारत में हथकरघा उद्योग समय के साथ सबसे महत्वपूर्ण कुटीर उद्योग व व्यापार के रूप में उभरा है। हथकरघा बुनकर कपास , रेशम और ऊन के शुद्ध रेशों का उपयोग कर उत्पाद तैयार करते रहे हैं। हैंडलूम उद्योग भारत की सांस्कृतिक विरासत का आवश्यक अंग है। पहले कुल्लू लोग सादे शॉल बुनते थे लेकिन हिमाचल प्रदेश के शिमला जिले के रामपुर से बुशहरी शिल्पकार के आने के बाद पैटर्न वाले हथकरघा का चलन अस्तित्व में आया। बहुत समय पहले तक पुरुष और महिलाएं अपने घरों में पारंपरिक खड्डियों (Pitlooms) में बुनाई का काम करते थे और सार्दियों के लिए परिवार के लिए गर्म कपड़ों की स्वयंभ्य वस्था करते थे। उसके बाद हथकरघा का चलन शुरू हुआ, यह संभवतः ब्रिटिश काल में उनके प्रभाव के कारण हुआ। कुल्लू की पारंपरिक बुनाई उत्पादों में दोड़, पट्टू, पट्टी (Tweed), शाल, टोपी के बार्डर व मफलर आदि आते हैं। सत्तर के दशक के पश्चात् पर्यटकों के बढ़ते आगमन व उसमें लगातार होती वृद्धि व पर्यटकों के कुल्लू हस्तशिल्प उत्पादों में रूचि इस कार्य में लगे लोगों खास कर महिलाओं के लिए, जो इस क्षेत्र के बुनकरों का लगभग 70% हैं, की आजीविका का साधन बनता गया। मैदानी क्षेत्रों में बने पावरलूम उत्पादों से इस क्षेत्र में विभिन्न कार्य कर रहे शिल्पियों और व्यवसाइयों को अपने उत्पादों के विपणन में कठिनायाँ आ रही है। भारत सरकार तथा राज्य सरकार समय समय पर इस क्षेत्र को प्रोत्साहन देने में प्रयासरत है

हिमाचल प्रदेश वन विभाग द्वारा संचालित तथा जाइका वित्तपोषित “ हिमाचल प्रदेश वन पारिस्थितिकी तंत्र प्रबंधन एवं आजीविका सुधार परियोजना” (PIHPFEM&L) के माध्यम से पारिस्थितिकी तंत्र प्रबंधन के साथ साथ वनों के पास रहने वाले समुदायों की आजीविका में सुधार के प्रयास किये जा रहे हैं। महिला स्वयं सहायता समूहों का गठन कर के उनकी रूचि के अनुसार गतिविधियों को चुन कर इन समूहों की सहायता की जा रही है। इस प्रकार की गतिविधियों में एक गतिविधि हथकरघा, जो कुल्लू का पारंपरिक शिल्प है, में भी महिलाओं ने काम करने की इच्छा जताई है। शिलिराजगिरी जैवविविधता प्रबंधन कमेटी की “लोट” उप समिति के “सरस्वती ”स्वयं सहायता समूह ने हथकरघा की गतिविधि का चयन किया है जिसके हर पहलू को ध्यान में रख कर इस व्यवसाय योजना को बनाया गया है।

## 2 कार्यकारिणी सारांश

हिमाचल प्रदेश के पश्चिम हिमालय में स्थित है। यह राज्य कुदरती सुंदरता और समृद्ध सांस्कृतिक व धार्मिक धरोहर से भरपूर है। राज्य में विविध पारितंत्र, नदियाँ व घाटियाँ पाई जाती हैं। इसकी आबादी 70 लाख के करीब है। इसका भौगोलिक क्षेत्र 55673 वर्ग कि० मी० है। हिमाचल प्रदेश में शिवालिक पहाड़ियों से लेकर मध्य हिमालय का क्षेत्र के ऊँचाई व और ठंडे जोन का क्षेत्र पाया जाता है। राज्य के लोगों का मुख्य व्यवसाय कृषि है। हिमाचल प्रदेश के 12 जिलों में से 7 जिले में हिमाचल प्रदेश वन पारिस्थितिकी तंत्र प्रबंधन और आजीविका सुधार परियोजना जाईका (JICA) के सहयोग से चलाई जा रही है। जिसमें कुल्लू जिला भी शामिल है।

हिमाचल प्रदेश वन पारिस्थितिकी तंत्र प्रबंधन और आजीविका सुधार परियोजना (जाईका वित्तपोषित) प्रारंभ होने पर जैवविविधता प्रबंधन कमेटी शिलिराजगिरी की "लोट" उप समिति की सूक्ष्म योजना बनाई गयी है। जैव विविधता उप समिति के लोगों का मुख्य व्यवसाय कृषि व बागवानी है परन्तु प्रत्येक परिवार की औसत भूमि चार बीघा से कम है इसके इलावा सिंचाई के कोई भी साधन नहीं है। अतः अधिकतर लोग जिले के अंदर व जिले के बाहर मजदूरी कमाने जाते हैं तथा सिंचाई की उचित व्यवसाय ना होने के कारण लोगों को उनके आय में आपेक्षित बढ़ोतरी नहीं हो पा रही है। यहाँ के लोग मुख्यतः गेहूँ, मक्की, जौ व दालों की खेती करने के साथ सेब, प्लम, नाशपति व खुमानी इत्यादि बागवानी फसले उगाते हैं। आय के वैकल्पिक साधन ना होने के कारण मजदूरी के लिए घर से बाहर जाना पड़ता है। इस समस्या से उबरने के लिए स्वयं सहायता समूह जय माँ दशिमवर्दाशाल, स्टॉल, बॉर्डर और मफलर इत्यादि का कार्य करके अपनी आजीविका बढ़ाने का निर्णय लिया है। आजीविका सुधार योजना गतिविधि के लिए स्थानीय स्वयं सहायता समूह बनाये गए हैं इन में से ज्योति स्वयं सहायता समूह का 10-06-2022 को गठन किया गया है। इस समूह में कुल 13 महिला सदस्य हैं जो सभी अनुसूचित सूचित जाति से सम्बन्ध रखती हैं। इस समान रूची समूह ने विस्तार से चर्चा करने पर शाल, स्टॉल, मफलर बनाने व विपणन करने का निर्णय किया है।

इस समूह में 2-3 सदस्य शॉल, स्टॉल और मफलर बुनाई का कार्य पहले से ही कर रही है। उत्पादन के बाद प्रारंभ में विपणन करने के लिए स्थानीय दुकानदारों या थोक विक्रेताओं के साथ समूह को जोड़ा जाएगा। दक्षता व उत्पादन में वृद्धि के साथ साथ विपणन की संभावनाओं को और अधिक स्तर में खोजने की और इसमें विस्तार की आवश्यकता होगी। अभी हाल ही में मुख्यमंत्री हिमाचल प्रदेश ने हथकरघा दिवस पर बताया था कि प्रदेश सरकार हिमाचल के हथकरघा उत्पादों की विक्री फ्लिपकार्ट के माध्यम से करने हेतु वार्ता कर रही है। उम्मीद है कि इस प्रकार के प्रयासों से स्वयं सहायता समूहों की आजीविका के साधनों में निरंतर सुधारा हो सकेगा। समूह के सदस्य सामूहिक तौर पर अधिक मात्रा में उत्पादन करके अपनी आजीविका बढ़ा सकती है।

शॉल, स्टॉल और मफलर बनाने के लिए कच्चा माल व खड़ीयां स्थानीय स्तर पर उपलब्ध है तथा विपणन की भी स्थानीय स्तर पर अपार संभावना है क्योंकि कुल्लू घाटी में लगभग पूरी साल पर्यटकों का आना जाना रहता है। कुल्लू के शॉल, स्टॉल, बॉर्डर, टोपी और मफलर आदि की सुंदरता भारतवर्ष में विख्यात है अतः पर्यटक घर लोटते समय अपने परिवार व मित्रों के लिए उपहार हेतु प्रचुर मात्रा में खरीददारी करते हैं। प्रारंभ में समूह के सदस्यों को परियोजना शॉल, स्टॉल, बॉर्डर और मफलर बनाने का प्रशिक्षण दिया जायेगा जिस पर सम्पूर्ण व्यय परियोजना वहन करेगी। इस समूह की सभी सदस्य अनुसूचित जाति की महिला है। अतः पूंजीगत व्यय का 75% राशी

परियोजना देगी तथा 25% अंश दान सदस्य देंगे। खड्डियों को गाँव में पहुँचाने व स्थापित करने आदि पर जो खर्च होगा उसे भी परियोजना से किया जायेगा। इसके अतिरिक्त 1,00,000/- परिक्रामी निधि (Revolving Fund) दिया जाएगा। समूह ने तय किया है कि सभी सदस्य नियम व शर्तों के हिसाब से तथा आपसी सहमति से कार्यो व इससे होने वाले लाभों का आपस में बंटवारा करेंगे।

व्यवसाय योजना बनाते समय समूह के सदस्य की सख्यां शॉल,स्टॉल और मफलर बनाने की क्षमता तथा कच्चे माल की उपलब्धता मांग व विपणन को ध्यान में रखकर बनाई गयी है। यह ववसाय योजना प्रिया ठाकुर ( S M S ) के सहयोग और श्री मान पदम् सिंह चौहान हि.प्र. वन सेवा (सेवानिवृत्त) के मार्ग दर्शन द्वारा बनाई गयी है।

### 3. स्वयं सहायता समूह का विवरण

3.1	स्वयं सहायता समूह का नाम	सरस्वती
3.2	जैवविविधता प्रबंधन कमेटी	शिलिराजगिरी
3.3	उपसमिति का नाम	लोट
3.4	वन परिक्षेत्र	वन्यप्राणी परिक्षेत्र कुल्लू
3.5	वनमण्डल	वन्यप्राणी मण्डल, कुल्लू
3.6	गाँव	डाबरी
3.7	विकास खण्ड	कुल्लू
3.8	जिला	दुल्लू
3.9	समूह के कुल सदस्यों की संख्या	13 महिलाएं
3.10	समूह के गठन की तिथि	10-06-2022
3.11	स्वयं सहायता समूह की मासिक बचत	50/-
3.12	बैंक का नाम और शाखा जंहा समूह का खाता संचालित	ग्रामीण बैंक दोहरानाला
3.13	बैंक खाता संख्या	88331300005954
3.14	समूह की कुल बचत	13000
3.15	समूह द्वारा सदस्यों को दिया गया ऋण	अभी तक नही
3.16	कैश क्रेडिट सीमा समूह सदस्यों द्वारा वापस किया गया ऋण की स्थिति	—

समूह में सम्मिलित सदस्यों का ब्यौरा निम्न प्रकार से है :

क्रमांक	लाभार्थी का नाम	पिता/ पति नाम श्री	पद	गाँव	आयु	लिंग	श्रेणी	सम्पर्क
1	मीना देवी	राम दयाल	प्रधान	डाबरी	44	स्त्री	अनु० जाति	6230621225
2	चंपा देवी	प्रेम चंद	सचिव	डाबरी	31	स्त्री	अनु० जाति	8580495262
3	गोरखी देवी	प्रेम चंद	कोषाध्यक्ष	डाबरी	38	स्त्री	अनु० जाति	8091195651
4	पिंकी देवी	पेरु राम	सदस्य	डाबरी	39	स्त्री	अनु० जाति	6230118239
5	हुकम दासी	हरी सिंह	सदस्य	डाबरी	46	स्त्री	अनु० जाति	7807685077
6	रामदेई	गोपीचंद	सदस्य	डाबरी	40	स्त्री	अनु० जाति	6230564267
7	शिवदासी	गुड्डू राम	सदस्य	डाबरी	55	स्त्री	अनु० जाति	9805023913
8	शीशमा	निशु राम	सदस्य	डाबरी	21	स्त्री	अनु० जाति	9805023913
9	विमला	धर्म चंद	सदस्य	डाबरी	39	स्त्री	अनु० जाति	8629090116
10	दुमा देवी	हीरू राम	सदस्य	डाबरी	49	स्त्री	अनु० जाति	9816513882
11	देवना देवी	मोहर सिंह	सदस्य	डाबरी	36	स्त्री	अनु० जाति	7018324822
12	रीतू	धर्म चंद	सदस्य	डाबरी	23	स्त्री	अनु० जाति	9816513882
13	रुक्मणि	वीर सिंह	सदस्य	डाबरी	33	स्त्री	अनु० जाति	8629097133

#### 4. गांव की भौगोलिक स्थिति

4.1	जिला मुख्यालय से दूरी	15कि० मी०
4.2	दोहरानाला मुख्य सड़क से दूरी	2.5 कि० मी०
4.3	स्थानीय बाजार का नाम और दूरी	कुल्लू 15, भुन्तर 22 कि०मी०
4.4	मुख्य बाजार से दूरी और नाम	कुल्लू 15 कि०मी०
4.5	अन्य प्रमुख शहरों और कसबों से दूरी	कुल्लू 15 कि०मी० मनाली 46 कि०मी० भुन्तर 22 कि०मी०
4.6	बाजार/बाजारों से दूरी जहा पर उत्पादन की बिक्री की जायेगी	कुल्लू 15 कि०मी० मनाली 40 कि०मी० भुन्तर 22 कि०मी०
4.7	ग्राम के सम्बन्ध में अन्य कोई विशिष्टता जो समूह द्वारा चयनित आय सृजन गतिविधि से सम्बन्धित हो	1-2 सदस्य पहले से हथकरघा बुनाई से अवगत हैं

## 5. आय सृजनगतिविधि से सम्बन्धित उत्पाद का विवरण

5.1	उत्पाद का नाम	शॉल, स्टॉल, बॉर्डर, और मफलर
5.2	उत्पाद की पहचान की पद्धति	समूह का 1-2 सदस्य अपने स्तर पर पहले से ही शाल, स्टाल व बॉर्डर बुनाई का कार्य करती है व उत्पादित समान को स्थानीय बाजार में भारी मांग है। समूह में उत्पादन व विपणन करने पर अतिरिक्त आय की आपार सभावना है।
5.3	समूह के सदस्यों की सहमति	हां (सहमति पत्र संलग्न है।)

## 6. उत्पादन की प्रक्रियाओं का विवरण

सर्व प्रथम समान रूची समूह के सदस्यों को परियोजना द्वारा शॉल, स्टॉल, बॉर्डर और मफलर आदि बनाने का प्रशिक्षण दिया जाएगा। प्रशिक्षण के उपरान्त समूह के सदस्यों द्वारा उत्पाद तैयार करने में निम्न प्रक्रिया की जाएगी:-

1. शाल, स्टॉल, का ताना व वाना, वार्षिक मशीन के द्वारा खरीद के स्थान पर ही विक्रेता द्वारा लगवाएंगे। इससे समय और उत्पादों की मजदूरी दर का खर्चा कम होगा।
2. समूह में सभी सदस्य आपस में कार्य का बटवारा करके शॉल, स्टॉल, बॉर्डर और मफलर बनाने का कार्य करेंगे।
3. सदस्य बारी-बारी विपणन करेंगे व कच्चा माल भी लाएंगे।
4. समूह के सदस्य प्रति दिन औसतन 4 से 5 घण्टे कार्य करेंगे।
5. प्रत्येक सदस्य द्वारा समूह के कार्यों पर लगाये समय का व्योरा रखा जायेगा।

प्रशिक्षण के उपरान्त समूह द्वारा निम्नलिखित उत्पादों का कार्य किया जाएगा। जिसका विवरण इस प्रकार से है :

### 1. शॉल

कुल्लू शाल अपने ज्यामितीय पैटर्न के लिए प्रसिद्ध है। विशिष्ट कुल्लू शॉल के दोनों सिरों पर ज्यामितीय डिजाइन होते हैं। ज्यामितीय डिजाइनों के अलावा, शॉल फूलों के डिजाइनों में बुने जाते हैं, जो केवल कोनों पर या सीमाओं पर ही होते हैं। प्रत्येक डिजाइन में एक से 8 रंग हो सकते हैं। परंपरागत रूप से, चमकीले रंग, जैसे लाल, पीले, मैजेंटा गुलाबी, हरे, नारंगी, नीले, काले और सफेद रंग का इस्तेमाल पैटर्निंग के लिए किया गया था और सफेद, काले और प्राकृतिक भूरे रंग को इन शॉलों में आधार के रूप में इस्तेमाल किया जाता था। लेकिन वर्तमान समय में ग्राहकों की मांग को ध्यान में रखते हुए इन चमकीले रंगों को धीरे-धीरे पेस्टल रंगों से बदला जा रहा है। विभिन्न रंगों में रंगे मिल स्पून यार्न का उपयोग जमीन के लिए किया जाता है, जबकि सीमा में पैटर्न के

लिए ऐक्रेलिक रंगों की एक विस्तृत श्रृंखला का उपयोग किया जाता है। ये शॉल भेड़ की ऊन, अंगोरा, पश्मीना, याक ऊन और हाथ से बनी सामग्री में उपलब्ध हैं। शॉल की कीमत ऊन की गुणवत्ता और उसमें इस्तेमाल किए गए पैटर्न की संख्या और चौड़ाई पर निर्भर करती है। इनमें लगने वाले धागों की किसम, रंग, डिजाइन आदि का चयन बाज़ार की मांग पर निर्भर करेगा। विभिन्न डिजाइनों की शॉले 4 सदस्यों द्वारा तैयार की जाएगी। अनुमान है कि प्रत्येक सदस्य द्वारा प्रति दिन में 4 से 5 घण्टें कार्य करने पर 2 दिन में 1 शॉल तैयार कर सकती हैं। चार सदस्य एक महीने में 60 शॉल बना सकते हैं।

## 2. स्टॉल

स्टोल एक महिला का शॉल है, विशेष रूप से महंगे कपड़े का औपचारिक शॉल। स्टोल का उपयोग परिष्कृत और फैशन के प्रति जागरूक महिलाएं करती हैं। इसे शॉल की तरह शरीर के चारों ओर लपेटा जा सकता है या कंधों से लटकाया जा सकता है। एक स्टॉल आमतौर पर शॉल की तुलना में लम्बाई व चौड़ाई में छोटा होता है। विभिन्न डिजाइनों की स्टॉल पांच सदस्यों द्वारा तैयार किया जायेगा। प्रत्येक सदस्य द्वारा प्रति दिन में 4 से 5 घण्टें कार्य करने पर 1 दिन में 1.3 स्टॉल तैयार कर सकती है। इस प्रकार चार सदस्य एक महीने में 156 स्टॉल तैयार कर सकते हैं।

## 3. बार्डर (बुलन/कैशमीलॉन)

कुल्लू शॉल की एक विशिष्ट विशेषता पार्श्व सिरों पर क्षैतिज रूप से चौड़ाई में चलने वाली धारियाँ या बैंड हैं। ये बैंड, कुछ सेंटीमीटर चौड़े पीले, हरे, सफेद या लाल जैसे शानदार रंगों में बुने हुए पैटर्न की विविधता से सजाए जाते हैं। इससे थोड़े भिन्न आकर के बार्डर का प्रयोग विशिष्ट कुल्लुवी टोपियों में विभिन्न आकर्षक डिजायनों में होता है जो इसे अलग पहचान देते हैं। बार्डर की बुनाई का काम 3 सदस्य करेंगे और 120 बार्डर तैयार करेंगे

## 4. मफलर

विभिन्न अवसरों पर विशिष्ट लोगों को सम्मानित करते समय टोपी और मफलर भेंट करना पहाड़ों की परंपरा में सम्मिलित है। विभिन्न डिजाइनों के मफलर एक सदस्य द्वारा तैयार किया जायेगा। एक सदस्य द्वारा प्रति दिन में 4 से 5 घंटे कार्य करने पर प्रत्येक दिन में 2 मफलर तैयार कर सकती है। समूह की दो महिला एक माह में 120 मफलर बना पाएंगी।

## 7. उत्पादन हेतु नियोजन का विवरण

7.1	उत्पादन चक्र (दिनों में) 30 दिन प्रतिदिन 4-5 घंटे कार्य करेंगे	60 शॉल 156 स्टॉल 60 मफलर 60 बार्डर
-----	---	---

7.2	प्रति चक्र कार्यकताओं की आवश्यकता (संख्या)	4 सदस्य शॉल के लिए 4 सदस्य स्टॉल के लिए 2 सदस्य मफलर के लिए 2 सदस्य बार्डर के लिए कुल 12 सदस्य
7.3	कच्चेमाल का स्रोत	कुल्लू, भुन्तर
7.4	अन्य संसाधनों का स्रोत	कुल्लू, मनाली, भुन्तर

\*प्रत्येक उत्पादन की मात्रा का अनुमान सांकेतिक है जिनका उत्पादन बाज़ार की मांग के अनुसार कम या अधिक करना होगा ।

<b>8 कच्चे माल की आवश्यकता एवं अनुमानित उत्पादन</b>						
क्र०सं०	नाम	इकाई	मात्रा	दर	राशी	आपेक्षित उत्पादन
<b>1</b>	<b>शॉल (80:20 धागा)</b>					
क	ताना बाना	kg.	15.8	800	12640	60 शॉल
ख	केशमीलॉन	kg.	1.7	500	850	
ग	वार्षिंग मजदूरी		60	25	1500	
घ	मजदूरी	दिहाड़ी	85	350	29750	
ड	पेकिंग, धुलाई अदि		60	25	1500	
	<b>योग</b>				<b>46240</b>	
<b>2</b>	<b>स्टॉल (80:20 धागा)</b>					
क	ताना बाना	kg.	39	800	31200	156 स्टॉल
ख	केशमीलॉन	kg.	3.9	500	1950	
ग	मजदूरी	दिहाड़ी	85	350	29750	
घ	पेकिंग, धुलाई अदि		156	20	3120	
	<b>योग</b>				<b>66020</b>	
<b>3</b>	<b>मफलर ऊनी</b>					
क	ताना बाना	kg.	12	1500	18000	120 मफलर
ख	मजदूरी	दिहाड़ी	30	350	10500	
घ	पेकिंग, धुलाई अदि		120	15	1800	
	<b>योग</b>				<b>30300</b>	
<b>3</b>	<b>बार्डर</b>					
क	ताना बाना	kg.	2.4	1500	3600	120 बार्डर
ख	मजदूरी	दिहाड़ी	30	350	10500	
घ	पेकिंग, धुलाई अदि		120	15	1800	
	<b>योग</b>				<b>15,900</b>	

## 9.विपणन/बिक्री का विवरण

8.1	सम्भावितबाजारों/स्थलों के नाम	कुल्लू, भुन्तर, मनाली
8.2	उत्पाद की बिक्री हेतु गांव से दूरी	कुल्लू 14 कि०मी० मनाली 46 कि०मी० भुन्तर 22 कि०मी०
8.3	बजार में उत्पाद की अनुमानितमांग	उत्पादन से अधिक मांग है।
8.4	बजार को चिन्हित करने की प्रक्रिया	खुदरा दुकाने में पर्यटकों के द्वारा बड़े पैमाने पर खरीदारी की जाती है तथा स्थानीय निवासियों द्वारा शादी व अन्य समारोहों पर खरीदारी की जाती है।
8.5	मौसम में परिवर्तन के अनुसार उत्पाद की मांग की स्थिति	सर्दी में उत्पादों की मांग बढ़ जाती है। गर्मियों में पर्यटक द्वारा खरीदारी करने पर सामान्य रहती है।
8.6	उत्पाद के संभावित खरीदार	पर्यटक व स्थानीय निवासी
8.7	क्षेत्र में संभावित उपभोक्ता	कुल्लू, लाहौल व मण्डी जिला के निवासी
8.8	उत्पाद का विपणन तंत्र	समान रुची समूह को कुल्लू, मनाली और भुन्तर के खुदरा दुकानदारों के साथ विपणन के लिए जोड़ा जाएगा तथा मेलों में प्रदर्शनी / स्टॉल लगा कर विपणन किया जाएगा।
8.9	उत्पाद के विपणन हेतु रणनीति	स्थानीय बाजार में मांग कम होने पर उत्पादन को मंड़ी, शिमला के खुदरा दुकानदारों से जोड़ा जाएगा। मांग बढ़ने या कम होने पर उत्पादन को मांग के अनुसार बढ़ाया या कम किया जाएगा।
8.10	उत्पाद का ब्राण्ड नाम	“हिम ट्रेडिशन “
8.11	उत्पाद का “नारा”	आओ बुनें हम

## 10. समूहसदस्यों के मध्य प्रबंधन का विवरण

- प्रबंधन के लिए नियम बनाये जाएंगे।
- समूह के सदस्य आपसी सहमति से कार्यों का बंटवारा करेंगे।
- बंटवारा कार्य की कुशलता व क्षमता के आधार पर किया जाएगा।
- लाभ का बंटवारा भी कार्य की गुणवत्ता व कुशलता तथा मेहनत के आधार पर किया जाएगा।
- विपणन में अनुभव रखने वाले सदस्य बारी-बारी से विपणन करेंगे।
- प्रधान व सचिव प्रबंधन का मुल्यांकन एवं अवलोकन समस-समय पर करते रहेंगे।
- समान रूप से लाभांश व मजदूरी का बंटवारा करेंगे

## 11. शक्ति, दुर्बलता, अवसर तथा चुनौती का विश्लेषण (SWOT Analysis)

### शक्ति

1. सभी समूह सदस्य सामान व अनुकूल सोच रखते हैं।
2. समूह के कुछ सदस्य छोटे पैमाने उत्पाद बनाने व विपणन का कार्य पहले से कर रही है। जिस से समूह के अन्य सदस्यों को बुनाई व विपणन में आसानी होगी।
3. उत्पादन लागत कम है तथा उत्पादन मांग अधिक है।
4. सदस्यों को घर के समीप ही उपलब्ध समय में आय वृद्धि का साधन मिलेगा।

### दुर्बलता: -

1. नया समान रुची समूह है।
2. समूह में कार्य करने का अनुभव नहीं है।
3. सदस्यों की आर्थिक स्थिति कमजोर है।

### अवसर: -

1. समूह में कार्य करने पर बड़े पैमाने पर उत्पादन किया जा सकता है।
2. स्थानीय बाजारों में शॉल, स्टॉल, बॉर्डर और मफलर इत्यादि की पर्यटन क्षेत्र होने के कारण मांग अधिक है।
3. परियोजना द्वारा खड़ी और चरखा इत्यादि खरीदने पर 50% किमत को वहन किया जाएगा।
4. परियोजना द्वारा हथकरघा का प्रशिक्षण विशेषज्ञ द्वारा मौके पर या प्रशिक्षण संस्थानों में करवाया जाएगा।

### जोखिम

1. समूह में आंतरिक झगड़े होने पर समूह का कार्य प्रभावित हो सकता है।
2. मांग व पारदर्शिता के अभाव में समूह टूटने की सम्भावना हो सकती है।
3. उत्पादों की मांग अधिकतर पर्यटकों के आगमन पर निर्भर रहेगा।
4. हैंडलूम में स्थापित संस्थाओं से सपर्धा का सामना करना होगा

## 12. संभावित चुनौतिया तथा उनको कम करने के उपायों का विवरण

क्र०सं०	जोखिमों का विवरण	जोखिम कम करने के लिए उपाय
1	उत्पादों की स्थानीय बाजारों में मांग कम होने की सम्भावना हो सकती है। जिसका विक्री व आय पर विपरीत प्रभाव पड़ेगा।	शिमला, मंडी के बाजारों के दुकानदारों को विपणन के लिए जोड़ा जाएगा।
2	उत्पाद की गुणवत्ता घटने से विक्री कम हो सकती है।	गुणवत्ता बनाये रखने के लिए समूह को उच्च मापदंड और कौशल अर्जित करना होगा।
3	स्थापित संस्थाओं से सपर्धा का सामना करना होगा।	गुणवत्ता व कार्य कौशल बनाये रखना होगा। विपणन की नयी संभावनाओं को तलाशते रहना होगा।

## 13. परियोजना की अर्थव्यवस्था का विवरण पूँजीगतव्यय

क्रमसं	नाम	संख्या	दर	कुललागत	% अंश	परियोजनाकाअंश75%	लाभार्थीकाअंश25%
1	खड़ी35"	13	12000	156000	75/25	117000	39000
2	चरखा	10	2000	20000	75/25	15000	5000
3	शटल	20	200	4000	75/25	3000	1000
	<b>योग</b>			<b>180000</b>		<b>135000</b>	<b>45000</b>

गतिविधि की अर्थव्यवस्था का व्योरा							
आवर्ती व्यय							
क्र०सं०	नाम	इकाई	मात्रा	दर	राशी	आपेक्षित उत्पादन	कुल राशी
<b>1</b>	<b>शॉल (80:20 धागा)</b>						
क	ताना बाना	kg.	15.8	800	12640	60 शॉल	
ख	केश्मीलॉन	kg.	1.7	500	850		
ग	वार्षिक मजदूरी		60	25	1500		
घ	मजदूरी	दिहाड़ी	85	350	29750		
ड	पेकिंग,धुलाई अदि		60	25	1500		
			<b>योग</b>		<b>46240</b>		<b>46240</b>
<b>2</b>	<b>स्टॉल (80:20 धागा)</b>						
क	ताना बाना	kg.	39	800	31200	156 स्टॉल	
ख	केश्मीलॉन	kg.	3.9	500	1950		
ग	मजदूरी	दिहाड़ी	85	350	29750		
घ	पेकिंग,धुलाई अदि		156	20	3120		

	योग				66020		66020
<b>3</b>	<b>मफलर ऊनी</b>						
क	ताना बाना	kg.	12	1500	18000	120	मफलर
ख	मजदूरी	दिहाड़ी	30	350	10500		
घ	पेकिंग,धुलाई अदि		120	15	1800		
	<b>योग</b>						<b>30300</b>
<b>4</b>	<b>बार्डर</b>						
क	ताना बाना	kg.	2.4	1500	3600	120	बार्डर
ख	मजदूरी	दिहाड़ी	30	350	10500		
घ	पेकिंग,धुलाई अदि		120	15	1800		
	<b>योग</b>					<b>15,900</b>	<b>15,900</b>
	<b>योग</b>						<b>1 58460</b>
2	स्थान का किराया, बिजली बिल आदि प्रति माह				2000		
3	किराया कच्चा माल व तैयार माल लाना ले जाना				2000		
4	अन्य खर्चे (रिपेयर्स स्टेशनरी आदि)				1000		
					<b>5000</b>		<b>5000</b>
	<b>कुल योग आवर्ती लागत</b>						<b>163460</b>
	आवर्ती व्यय (आवर्ती लागत-मजदूरी) 163460-80500						<b>82960</b>
	<b>कुल व्यवसाय योजना 180000+163460</b>						<b>343460</b>
<b>4</b>	<b>अनुमानित आय</b>						
	<b>प्रत्यक्ष आय</b>						
	शॉल		60	1900	114000		
	स्टॉल		156	1000	156000		
	मफलर		120	400	48000		
	बार्डर		120	150	18000		
	योग प्रत्यक्ष आय				<b>336000</b>		<b>336000</b>
	अप्रत्यक्ष बचत या आय यदि कोई हो				-		-
	<b>कुल अनुमानित आय</b>				<b>336000</b>		<b>336000</b>

#### 14. अर्थव्यवस्था का सारांश

क्र०स०	विवरण	धनराशि (रु०)
1	कुल आवर्ती व्यय	163460
2	पूजीगत व्यय पर 10% वार्षिक मूल्य ह्रास	1500
	<b>योग</b>	<b>164960</b>

- पूजीगत व्यय का 25% लाभार्थी अंश तथा आवर्ती व्यय समूह के सदस्य नगदी के रूप में जमा करके वहन करेंगे।

15		वित्तीय सारांश							
विक्रय मूल्य की गणना प्रतिवस्तु तथा कुल उत्पादन की विक्री से आय									
क्र०सं०	मद	अनुमानित उत्पादन संख्या	उत्पादन की लागत	लाभ प्रतिशत	लाभांश	कुल विक्रेय मूल्य (3+5)	बाज़ार विक्रय दर	कुल उत्पादन की विक्री से आय	
1	2	3	4	5	6	7	8	9	
1	शॉल	60	770.66	146.54	1129.34	1900	2100	114000	
2	स्टॉल	156	423.20	136.29	576.80	1000	1200	156000	
3	मफलर	120	252.5	58.41	147.5	400	500	48000	
4	वार्डर	120	132.5	13.20	17.5	150	160	18000	
<b>विक्री से आय का योग</b>								<b>336000</b>	
<b>16 मूल्य-लाभ विश्लेषण (एक चक्र =1 महीना)</b>									
क्र०सं०	मद					राशी	कुल राशी		
	पूँजीगत व्यय पर 10% वार्षिक मूल्य ह्रास					1742	<b>1742</b>		
	<b>आवर्ती लागत</b>								
	कमरे काकिराया, बिजली खर्चा अदि					2000			
	मजदूरी					80500			
	कच्चा मालव पैकिंग, ड्राईक्लीनिंग आदि व्यय					77960			
	अन्यखर्चे(रिपेयर, स्टेशनरी अदि)					1000			
	परिवेहन खर्चेसामान कच्चा व तैयार					2000			
	<b>योग</b>						<b>163460</b>		
	कुल लाभ 336000- 163000							173000	
	शुद लाभ 173000-(1742+80500)							90758	
	उत्पादविक्री से सकल लाभ(लाभ+मजदूरी+किराया) 90758+80500+2000							1,73,258	
	एकमाह पश्चात् समूह में वितरण योग्य राशी (उत्पादों से आय-(दुसरे चक्र हेतु आवर्ती व्यय)=173258-82960							90298	

- पूँजीगत व्यय का 25% समूह के सदस्य नकदी CASH के रूप में देंगे तथा 75% परियोजना द्वारा वहन करेंगे ।
- 1,00,000रुपए स्वयं सहायता समूह को बैंक से ऋण लेने के लिए एक परिक्रामी निधि के रूप में प्रदान किया जाएगा।

<b>17</b>	<b>धनराशी की आवश्यकता</b>	
<b>क</b>	<b>समूह की पहले माह की आवश्यकता</b>	
<b>क्र०सं०</b>	<b>मद</b>	<b>राशी</b>
1	पूँजीगत व्यय	180000
2	आवर्ती व्यय	82960
	योग	2,62,960
<b>ख</b>	<b>समूह के वित्तीय साधन</b>	
<b>क्र०सं०</b>	<b>वित्तीय प्रबंध का विवरण</b>	<b>राशी</b>
1	परियोजना द्वारा पूँजीगतव्यय का अनुदान	135000
2	समूह के सदस्यों का नकदयोगदान	45000
4	समूह की वचत	13000
	योग	193000

## 18. सम विच्छेदनबिन्दू (ब्रेक ईवन प्वाइन्ट) की गणना:

ब्रेक ईवन पॉइंट

अतः ब्रेक ईवन पॉइंट =  $180000/90758 = 1.98$  महीना X 30 दिन = 59 दिन

प्रत्येक शॉल, स्टॉल और मफलर के लाभ की गणना पर सम विच्छेदन बिन्दू 59 दिनों में उपरोक्त अनुपात में विक्रय करने पर प्राप्त किया जा सकता है

## टिप्पणी

समूह द्वारा 60 शाल 156 स्टाल 120 मफलर और 120 बार्डर बनाने से समूह की 173000 रूपय आय होगी जिसमे समूह को 82960 रूपय मजदूरी के रूप में और 90758 रूपय लाभ के रूप में होगी | इस प्रकार प्रत्येक सदस्य 6913 रूपय मजदूरी के रूप में व 7563 रूपय लाभांश के रूप में महीने में केवल 4-5 घंटे कार्य करने पर अर्जित करेंगे |

## 19. समूह के नियम

1. समूह का काम : हथकरघा (शॉल,स्टॉल,बॉर्डर, व मफलर बुनाई)
2. समूह का पता : गाँव डाबरी , डाकघर दोहरानाला , तहसील भुंतर जिला कुल्लू, हिमाचल प्रदेश।
3. समूह के कुल सदस्य: 13
4. समूह की पहली बैठक की तिथि: 10/06/2022
5. समूह में हर 100 रूपए पर 2 रूपए ब्याज मासिक होगा।
6. समूह की मासिक बैठक हर माह की 8 तिथि को होगी।
7. समूह के सभी सदस्य हरमाह की बचत की गई राशी को समूह में जमा करेंगे।
8. स्वयं सहायता समूह की बैठक में सभी सदस्य को शामिल होना पड़ेगा।
9. स्वयं सहायता समूह का खाता ग्रामीण बैंक शाखा दोहरानाला में खोला है खाता संख्या नंबर 88331300005954 है।
10. समूह की बैठक में गेर हाज़िर रहने के लिए प्रधान व सचिव को उचित कार्य बता कर अनुमति लेनी होगी।
11. समूह जो बचत की राशी जमा नहीं करवाते या 3 बैठकों तक समूह से गेर हाज़िर रहते हैं तो उस महिला को समूह से निकाल दिया जाएगा।
12. समूह में जो व्यक्ति कारण बताए वगेर गेर हाज़िर रहता है तो अगली बैठक उस व्यक्ति के घर में होगी जिसका खर्च उस व्यक्ति को खुद करना होगा अगर दो सदस्य होंगे तो खर्च मिल कर देना होगा।
13. भविष्य में स्वयं सहायता समूह के प्रधान व सचिव सर्व सहमति से चुने जाएंगे।
14. प्रधान व सचिव बैंक से लेन देन कर सकते हैं यह पद एक वर्ष तकमान्य होगा।
15. प्रधान, सचिव या सदस्य समूह के विरुद्ध कोई काम नहीं करेगा समूह की रकम का सदा सदुपयोग करेंगे।
16. अगर सदस्य किसी कारणवश समूह को छोड़ना चाहता है अगर इस व्यक्ति ने ऋण लिया है तो समूह को वापिस करना होगा तभी समूह को छोड़ समता है अन्यथा नहीं
17. ऋण का उद्देश्य रकम की चुकोती का समय ऋण की किश्त और ब्याज की दर बैठक में तय की जाएगी।
18. आपातकालीन स्थिति के लिए प्रधान व सचिव के पास कम से कम 1000 रूपये की राशी होनी चाहिए।
19. स्वयं सहायता समूह के रजिस्टर को सभी सदस्यों के सामने पढ़ा व लिखा जाना चाहिए।
20. बड़े ऋण लेने वालों को एक सप्ताह पहले की सूचना देनी होगी।
21. ऋण जरूरत के समय सभी सदस्यों को मिलना चाहिए।
22. अगर सदस्य बिना कारण से समूह को छोड़ना चाहता है तो उस सदस्य की जमा राशी समूह में बांट दी जाएगी।

23. स्मूह को अपनी मासिक रिपोर्ट प्रतिमाह तकनीकी क्षेत्रीय इकाई(Field Technical Unit kullu )के कार्यालय में देनी होगी

## 20 स्वयं सहायता समूह के फोटोग्राफ:

 <p>मीना देवी</p>	 <p>चम्पा देवी</p>	 <p>शेषमा</p>	 <p>दूमा देवी</p>
 <p>रीतू</p>	 <p>देवना देवी</p>	 <p>रामदेई</p>	 <p>रुकमनी</p>
 <p>हुकुम दासी</p>	 <p>पिंकी देवी</p>	 <p>गोरखी देवी</p>	 <p>बिमला देवी</p>
 <p>शिवेदासी</p>			

Prepared By: Priya Thakur SMS  
WL Division Kullu

Resolution-cum-Group-consensus Form

It is decided in the General house meeting of the group सिद्धा  
held on 10-6-2022 at सिद्धा that our group will undertake the  
एच अरईए as Livelihood Income Generation Activity under the Project for  
Implementation of Himachal  
Pradesh Forest Ecosystem management and Livelihood (JICA assisted).

Chamba Devi  
Signature of Group President  
डाबरी, ग्राम पंचायत

Pradhan  
BMC Sub-Committee For  
Signature of President BMC

Assistant Conservator of Forest  
Wild Life Division KULLU

Chamba Devi  
Signature of Group Secretary

Signature  
Signature of FTU-Cum-RFO

Approved  
Signature  
Divisional Management Unit Officer-Cum-  
Divisional Forest Officer, Wild Life Division,  
Kullu, District Kullu.